परम पावन चौदहवें दलाई लामा जी को नोबेल शान्ति पुरस्कार से सम्मानित करने की 31वीं वर्षगांठ के सुअवसर पर निर्वासित तिब्बती संसद का वक्तव्य।*

आज, १० दिसंबर २०२० को, आकाशीय देवताओं सहित उन दोनों चक्रीय भव (संसार) व शान्ति (निर्वाण) से अलंकृत, तीनों लोक के आध्यात्मिक नेता, विश्व शान्ति दूत, समस्त धारती पर बुद्ध के शिक्षाओं का प्रबुद्ध, हिमवत तिब्बत देश के संरक्षक देव, आर्य आवलोकितेश्वर के अवतरित, समस्त तिब्बतियों के नाथ व आध्यात्मिक नेता परम पावन चौदहवें दलाई लामा जी को दुनिया के विशिष्ट शान्ति पुरस्कार, नोबल शान्ति पुरस्कार से सम्मानित करने की पूरे ३१ वर्ष के होने की वर्षगांठ मना रहे हैं। इस सुअवसर पर आपके निरन्तर अचिन्तनीय गतिविधियाँ से आकाश में व्यप्त सभी सत्वों को सुख प्रदान करते आ रहे हैं। निर्वासित तिब्बती संसद आपको समस्त तिब्बतियों की ओर से आनन्द, श्रद्धा व प्रसन्नचित्त होकर साष्टाङ्ग प्रणाम करते हुये अभिनन्दन व टाशि देलेक व्यक्त करता है।

यह दिन, जो विश्व मानवाधिकार दिवस को भी चिह्नित करता है। साधारणत: तिब्बतियों व विशेषकर दुनिया के लोकतन्त्र, स्वतन्त्रता और शान्तिप्रिय जनताओं द्वारा उनके अतुलनीय कर्मों के लिये सम्मान करते हैं, धर्म के अनुरूप हर्षोल्लास का यह एक पवित्र दिन हैं। तिब्बत एक धार्मिक रूप से डूबे हुये सांस्कृतिक विरासत और परम्पराएं बुद्ध के विमल शिक्षाओं के अद्वितीय दार्शनिक विचारधारा और अभ्यास के बीच से उभरी और विकसित हुई हैं। इस अन्धकार युग में तिब्बत के सुसंस्कृति की संरक्षित कर रखा है। परम पावन जी ने तिब्बत के लोगों को अहिंसा के दृढ़ मार्ग पर अग्रसर किया है, और संसार में तिब्बत देश को एक शान्तिप्रिय क्षेत्र रूप में बदलने का गहन योजना है। और यह एक महान कार्य है कि परम पावन ने तिब्बत के मद्दे का हल निकालने हेतु मध्यम मार्ग के द्वारा पारस्परिक रूप से लाभकारी दृष्टिकोण की ओर एक रास्ता खोला है। मौलिक महत्व के इस तथ्य की आधार पर सभी संवेदनशील प्राणी स्वयं को दु:ख और पीड़ा के अधीन पाते हुये एक सुखी जीवन जीने की इच्छा सभी में एक समान हैं। परम पावन जी ने सदाचार (नैतिकता) की भावना को बढ़ावा देते हुये पर्यावरण की रक्षा करने, विभिन्न धार्मिकों के अनुयायियों के बीच सद्भाव को बढ़ावा देने, युद्ध व संघर्ष को शान्त करने का

उपाय आदि द्वारा विश्व में शान्ति रहें इसकी वे सार्वभौमिक उत्तरादायित्व मानव बुद्धि की पहुँच से परे सेवा कर योगदान देते आ रहें है। उनके योगदान की विशालता को समझने की बुद्धिमत्ता रखने वाले सभी लोगों ने उन्हें उनके इस प्रयासों के लिये प्रोत्साहित किया और अन्ततः उन्हें नोबेल शान्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

परम पावन दलाई लामा जी को नोबल शान्ति पुरस्कार प्रदान करते समय नॉर्वेजियन नोबेल समिति ने अपने प्रस्तुतीकरण भाषण में कहा कि "परम पावन दलाई लामा जी ने तिब्बत के मद्दे का हल करने के प्रयास में हिंसाक कार्य को बिलकुल रोकने के लिये कहते हैं। परम पावन जी ने सहन, समादर आदि को आधार बना कर तिब्बत के लोगों की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित किया। तिब्बत के मुद्दे का हल के समाधान में अहिसंक उपायों द्वारा प्रयास करते रहे हैं। इतना ही नहीं परम पावन जी ने समस्त जगत के सत्वों को अत्यधिक समान, मानव जगत के सत्वों व पर्यावरण आदि का सार्वभौमिक उत्तरादायित्व की अवधारणा पर अहिंसक सिद्धान्त का अभ्यास करते हैं" इत्यादि संजीदा के साथ कहा था।

नोबेल शान्ति पुरस्कार स्वीकार करते समय, परम पावन दलाई लामा जी ने कहा : "मेरा मानना है कि पुरस्कार बुद्ध और भारत तथा तिब्बत के महान सन्तों की शिक्षा है परोपकारिता, प्रेम, करुणा और अहिंसा आदि के सही मूल्य की मान्यता है जिसे मैं दुनिया के उन सभी शोषितों की ओर से और उन सभी लोगों, जो आज़ादी के लिये संघर्षरत हैं और विश्व शान्ति के लिये काम करते हैं, इसलिये गहरा आभार के साथ पुरस्कार स्वीकार करता हूँ। अहिंसक कार्यवाई की माध्यम से बदलाव लाने की परम्परा है, जो कि आज के समय वह नया कल्पना करने वाले महात्मा गाँधी जी को श्रद्धाञ्जलि के रूप में स्वीकार करता हूँ। विशेषकर मेरी जनता जो अत्यधिक उत्पीड़न सहन करने वाले उन तिब्बती बहादुर पुरुषों-महिलाओं, निश्चित रूप से, मैं इसे छह मिलियन तिब्बती लोगों की ओर से स्वीकार करता हूँ। इस प्रकार की पुरस्कार से सत्य, साहस, उत्साह आदि को साधन रूप में तिब्बत की मुक्त होगी इसकी पुनः विश्वास की पुष्टि करता है।" ऐसा सन्देश दी थीं। हम सभी सतू प्रेमी तिब्बतियों द्वारा परम पावन जी के उद्देश्यों के पूर्ति हेतु हमारे कार्य सदैव अहिंसक, परोपकार, प्रेम और करुणा आदि सिद्धान्तों की नींव पर आधारित हों, हमें परम पावन जी की चार प्रमुख शपथ-आधारित प्रतिबद्धाओं का अध्ययन व उन पर

कार्यान्वयन कर सकें तो वह परम पावन जी को हमारी सच्ची कृतज्ञता होगी। सभी तिब्बतियों द्वारा तदनुसार ध्यान में रखने की अनुरोध करता है।

इस वर्ष के नोबेल शान्ति पुरस्कार विश्व खाद्य कार्यक्रम, संयुक्त राष्ट्र संगठन के एक अंग को प्रदान किया जाना निश्चित हुआ है और निर्वासन में तिब्बती संसद की ओर से बधाई तथा प्रशंसा व्यक्त करता है। यह विश्व खाद्य कार्यक्रम संगठन की माध्यम से विश्व में प्राकृतिक आपदाओं व युद्ध इत्यादि के कारण हुये उन मानवता की भूख आदि की समस्याओं से बाहर निकालने का संघर्ष करते हैं। इस प्रकार की कार्य एक खुशहाल समाज बनाने का है। यह प्रयास व परिश्रम बिना किसी रुकावट के चलती रहे। ऐसी हमारी आशा व प्रार्थना है।

शान्ति, स्वतन्त्रता और सुखी से चिह्नित एक मानव समाज की दृष्टि को साकार करने के प्रयास में, परम पावन दलाई लामा जी ने अत्यधिक प्रयासों के साथ असंख्य उत्तरादायित्व संभाली हैं। उन्होंने दुनिया के पूर्वी-पश्चिमी देशों की यात्रा किये हैं, जहाँ उन्होंने करुणा और प्रेम, सहिष्णुता, परोपकारिता, अहिंसा और धर्मनिरपेक्ष नैतिकता की भावना को विकसित करने का कार्य किये हैं। विशेष रूप से, दुनिया में विभिन्न धर्मों के बीच विश्वास, एकजुटता के साथ भाईचारा शान्ति के साथ व्यवहार हों, आप इसके लिये प्रयासरत हैं, वे विषयक की गहनता को बड़ी सरलता के साथ श्रोताओं के चेतना में औषध भाँति निश्चित लाभ हो ऐसी बारम्बार सन्देश व उपदेश दिये हैं। हाल ही में, वर्ष २०२० की शुरुआत से, मध्य चीनी शहर वुहान से कोविद-१९ संक्रमण के फैलने के कारण इस वैश्विक महामारी ने दुनिया भर में लोगों की आवाजाही में बाधा पहुँचा है। ऐसी स्थिति को देखते हुये, परम पावन जी ने प्रमुख हस्तियों, छात्रों, संगठनों, निजी व्यक्तियों और दुनिया भर में स्थित अन्य लोगों के साथ तिब्बती, अंग्रेज़ी इत्यादि अन्य भाषाओं में अनुवादकों के साथ ऑनलाइन वार्तालाप तथा धार्मिक प्रवचन दिये हैं। इस प्रकार कोविद-१९ संक्रमण व लॉक डॉउन के कारण उत्पन्न चिन्ता से उनके शारीरिक समस्यायों और भावनात्मक परेशानियों से निपटने के तरीकों के बारे में सुझाव देते हुये, उनमें आशावाद की भावना जागृत किये। उन्होंने लोगों को नैतिक व्यवहार को बढ़ाने और प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा व शिक्षित करने के लिये निर्देशित विषयों पर ध्यान केन्द्रित किया गया। विशेष रूप से, उन्होंने सम्बन्धित क्षेत्रों के विशेषज्ञों के मन और शरीर सम्मेलन में भाग लिये। उनके वार्तालाप में करुणा, अहिंसा, के विषयों से

सम्बन्धित प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षित करने की तरीकों आदि पर सन्देश, मार्गदर्शन एवं विचार-विमर्श आदि प्रदान कर अनुग्रहित किये हैं।

परम पावन चौदहवें दलाई लामा जी ने अहिंसक विचारधारा का अभ्यास तथा तिब्बत व चीनी दोनों के लिये पारस्परिक रूप से लाभप्रद मध्य मार्ग की नीति की कार्यानवयन करने की मार्गदर्शन आदि को देखते हुये अब तिब्बत का मुद्दा अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर पहुँच सका है। इतना ही नहीं, संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोप, कनाडा, और यूनाइटेड किंगडम सहित कई देशों के दोनों सदनों में समय-समय पर तिब्बत के मुद्दे पर विचार-विमर्श के साथ कई प्रस्तावों को पारित किया। उदाहरणस्वरूप हाल में अमेरिकी संसद के प्रतिनिधि शिरी टेड योहो ने कहा कि निचले सदन में चीन के पीपुल्स रिपब्लिक को तिब्बतियों के लिये वास्तविक स्वायत्तता हेतु प्रयास, परम पावन चौदहवें दलाई लामा जी द्वारा वैश्विक शान्ति को बढ़ावा देना, सद्भाव आदि बनाये रखने की कार्यों को अमेरिकी प्रतिनिधि सभा में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया है।

इसी तरह, सीनेटर जोश हॉली ने अमेरिकी सीनेट में एक प्रस्ताव पेश किया जिसमें कहा है कि "चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा तिब्बत में धार्मिक स्वतन्त्रता को नष्ट करने के लिये क्रूर नीतियों का प्रयोग कर रहा है, इतना ही नहीं तिब्बतियों को बलपूर्वक बन्दक बनाकर बलात् श्रमिक बनाया जाने की कार्यवाही का निन्दा की है।"

और इस वर्ष १४ अक्टूबर को, संयुक्त राज्य अमेरिका के सचिव श्री माइक पोम्पिओ ने राज्य विभाग के ब्यूरो ऑफ डेमोक्रेसी, मानवाधिकार, और लेबर के सहायक सचिव श्री रॉबर्ट ए. डेस्ट्रो को तिब्बती के लिये संयुक्त राज्य अमेरिका के विशेष तिब्बती समन्वयक के रूप में नियुक्त किया। उन्होंने केन्द्रीय तिब्बती प्रशासन के माननीय सिक्योंङ को व्हाइट हाउस में आमन्त्रित किया है जो कि अमेरिका का तिब्बत के समस्यों पर समर्थन का होना प्रकट करता है।

पुनः इस वर्ष १७ नवंबर को, संयुक्त राज्य अमेरिका के स्टेट डिपार्टमेंट मानवाधिकार विकास हेतु धार्मिक स्वतन्त्रता पर बड़े पैमाने पर देश के राजदूतों का एक ऑन लाइन बैठक का आयोजन किया, जिसमें अन्तर्राष्ट्रीयधार्मिक स्वतन्त्रता संरक्षण विभागाध्यक्ष, श्री सैम डी. ब्राउनबैक ने दलाई लामा के अवतार निर्धारण से सम्बन्धित मामलों में चीन के हस्तक्षेप का कड़ा विरोध व्यक्त किया।

इस वर्ष १७ नवम्बर को, कनाडाई संसद की विदेश मामलों और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर सीनेट की स्थायी समिति ने "तिब्बत में मानवाधिकार की स्थिति पर नवीनतम" विषय पर सुनवाई का आयोजित की। इस सुनवाई में, ग्रेटर चाइना पॉलिसी एंड कोऑर्डिनेशन, ग्लोबल अफेयर्स कनाडा के कार्यकारी निदेशक श्री शॉन स्टिल ने तिब्बत के मुद्दे को उठाया, साथ ही चीन-तिब्बती मध्य समस्यों का हल संवाद द्वारा हो सकें, और इसकी निरन्तर समर्थन व प्रयास करने की बात की गई।

पूर्व उपराष्ट्रपति श्री जो बिडेन और सीनेटर सुश्री कमला हैरिस को हाल ही में संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति और उप-राष्ट्रपति के रूप में चुना गया। और यह निश्चित है कि वे शीघ्र ही अपने पद ग्रहण करेंगे। उन्हें हम बधाई देते हैं, साथ ही तिब्बती के समस्या पर नई अमेरिकी सरकार के नेतृत्व के रूप में अश्वसान के अनुरूप अमल में लाने का अपना समर्थन पर समस्त तिब्बतियों की ओर से भी अत्यन्त आशा करते हैं।

विश्व शान्ति दूत परम पावन दलाई लामा जी ने विश्व में विध्वंसकारी शस्त्रों पर पुरी तरह रोक लगाने तथा लम्बे समय के लिये सार्थक शान्ति बनाये रखने के लिये समय-समय पर मार्गदर्शन प्रदान करते रहे हैं। इस वर्ष २४ अक्टूबर के दिन संयुक्त राष्ट्र के ५० सदस्य देशों के बीच परमाणु शास्त्रों के प्रयोग पर रोक लगाने सम्बन्धित सहमति प्रस्ताव रखा गया जिसके अन्तर्गत २२.०१.२०२१ से परमाणु शस्त्रों के प्रयोग पर रोक लागु किया जायेगा। निर्वासित तिब्बती संसद की ओर से इस निर्णय का स्वागत एवं अभिनन्दन करते हैं। इस प्रस्ताव से विश्व में परमाणु शस्त्र सर्वथा बन्द होकर सार्थक शान्ति के साथ जीवन यापन का शुभ समय आने की आशा करते हैं।

परम पावन जी के वास्तविक मार्गदर्शन के तहत तिब्बत मुक्ति साधना का प्रयासपथ तथा तिब्बतीयों की सुचरित्र एवं सत्यनिष्ठा से प्रभावित होकर विश्व के कई देशों ने तिब्बतियों की स्वतन्त्रता और पहचान को बचाई रखने के लिये जो कुछ किया जा सकता है अपने स्तर पर कर रहे हैं, पर उससे उलट चीनी सरकार तिब्बत पर दमनकारी नीति को कठोरतम रूप में बनाये रखे हुये हैं। अभी तक चीन सरकार के पास मानवाधिकार पालन करने का एक भी कार्य गिनाने के लिये नहीं है। परन्तु चीन के

अन्दर, विशेषकर तिब्बत तथा अन्य अल्पसंख्यक समुदायों के प्रति मानवाधिकारों की उल्लंघना के साथ ही प्रताड़ना की नीति अपनाई जा रही है। उदाहरण के लिये ०३.१०.२००८ के शुरुआत से तीनों प्रान्तो के तिब्बतियों ने लाखों के संख्या में विरोध प्रदर्शन किया है। विशेषकर २००९ से अभी तक तिब्बत में ही १५४ तिब्बत के वीरों नें अपने देश के लिये प्राणों की आहुती देकर चीन सरकार के दमनकारी नीति के विरूद्ध शान्तिपूर्ण विरोध दर्ज किया है। इसी साल जून में ही तिब्बत के कनल्हो क्षेत्र सङ्छु जिला न्यायालय में दस तिब्बतियों को अदालती कार्यवाही के नाम पर जबरन पैसे ऐंठे गये और गैर कानूनी धन्धे का लांछन लगाते हुये ९ से १४ साल कारावास का दण्ड दिया गया है। इसी प्रकार डिरू जिले के छकन्ने युलछो गाँव के ३९ साल के तेन्ज़िन थरपा और उनके ३६ साल की मामा की लड़की ल्हमो को झूठे आरोप में दोनों को जेल भेजा गया। ल्हामो को जेल की सलाखों में पूछताछ के नाम पर इतनी यातना दी गई की उनकी मृत्यु हो गई। उपरोक्त कारणों से चीन की असलीयत का पता चलता है। कुछ समय पहले तिब्बत और पूर्वी तुर्कस्तान पर शोध करने वाले एडरियन ज़ेन्ज़ ने अपने शोध में तिब्बत में चीनी सरकार द्वारा पाँच लाख तिब्बतियों को बन्धुआ मज़दूर बनाये जाने की बात कही है और तिब्बत में मानवाधिकार की दशा बद से बदतर होने का विवरण दिया है। फिर भी संयुक्त राष्ट्र के ७५ आमसभा के दौरान १३.१०.२०२० के दिन संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद के चार सदस्य देशों के लिये मतदान में एशिया और प्रशान्त महासागर क्षेत्र में मावनाधिकारों का दमनकारी चार देशों में से चीन को संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद के एक सदस्य के रूप में चुना गया है जो अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है। चीनी सरकार के दमन में यातना झेल रहे तिब्बती, मंगोलिया, उईगुर, हॉगकॉग आदि देशों के नागरिकों की बुनियादी मानवाधिकारों का रक्षा करने का दायित्व चीन का समर्थन करने वाले सभी देशों का होगा यह स्पष्टता के साथ कहना चाहूँगा। संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद के सदस्य बनने के बाद चीन को भी अन्तर्राष्ट्रीय मानव अधिकार की रक्षा पर बनाये गये अन्तर्राष्ट्रीय नियमों का पालन करना चाहिये और तिब्बत, चीन तथा अन्य अल्पसंख्यक समुदायों के अधिकारों को वचन के अनुसार सार्थकता के साथ अनुपालन करना होगा, साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर चीन पर कड़ी निगरानी रखने का आग्रह करता हूँ।

तिब्बत में रह रहे बहुल तिब्बतीयों के हौसले और सच्चे देशप्रेम भावना के बल पर चीन का दमनकारी नीति का प्रतिरोध कर रहे सभी का साधुवाद करना चाहूँगा। निर्वासित में रह रहे तिब्बतियों को परम पावन जी के विचार अनुरूप एकता भाव तथा अहिंसात्मक मार्ग से तिब्बत के समस्या का हल तलाशना तथा समाज के लिये लाभदायक कार्य करना चाहिये। तिब्बत में रह रहे हमारे तिब्बतियों के मन में चीन सरकार के प्रति पनप रहे रोष, उनके दु:ख दर्द, उनके कठिन प्ररिस्थितियों को कभी भी नहीं भूलना चाहिये। बुहत जल्द काली बादल छंटकर सूर्य की किरणों का दीदार हो सके इसके लिये प्रयत्नशील रहने की प्रण लेते हैं।

निर्वासित तिब्बती संसद की ओर से तिब्बत के समस्या का हल और तिब्बत मसले पर बढ़ते समर्थन का तिब्बत निवेदन प्रक्रियाओं को और अधिक आगे बढ़ाना, उत्तरादायित्व के साथ सहानुभूति प्रकट करना तथा दृढ़ता से समर्थन देने वाले भारत सहित दूसरे देशों की सरकारें, जनता, संसद, गैर सरकारी संस्थाओं आदि सभी को आभार प्रकट करना तथा भविष्य में इससे भी अधिक समर्थन देने के लिये निवेदन करता है।

पूरे विश्व को चीन निर्मित कोविड-१९ संक्रमण के कारण जान माल दोनों को निरन्तर हानि पहुँच रही है जिस पर हम सहानुभूति प्रकट करते हुये सबको अपने-अपने देशों के स्वास्थ्य निर्देशों के अनुरूप इस महामारी से बचने के लिये ज़रूरी एहतियात बरतना आवश्यक है, और प्रार्थना करता हूँ कि इस महामारी से मुक्त हो।

अन्त में परम पावन दलाई लामा जी की दीर्घायु हो, तथा सारे मनोकामना पूर्ण हो, तिब्बत के समस्या का समाधान शीघ्र होने के साथ ही हम सब अपने देश में खुशहाल जीवन जीने की कामना करता है।

निवार्सित तिब्बती संसद

१०.१२.२०२०

* इस हिन्दी अनुवाद में किसी भी प्रकार के विसंगति के मामले में सभी प्रयोजन हेतु ,तिब्बती मूल को आधिकारिक और अन्तिम माना जाना चाहिये।